IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

मारवाड़ की काष्ठ कला : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

डॉ मधु कुमावत
सहायक आचार्य इतिहास
श्री रंकपा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किशनगढ़
madhukumawat289@gmail.com

सारांश:- काष्ठ कला का मारवाड़ के साथ ही भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कुल्हाड़ी, खिलौने, बर्तन, सजावटी सामान, गहने और कई सजावटी घरेलू सामान जैसे लैंप शेड, मोमबत्ती स्टैंड, सिंदूर के बक्से, गहनों के बक्से, चूड़ी होल्डर आदि कुछ ऐसे सामान्य लकड़ी के शिल्प हैं जो लगभग हर भारतीय घर में उपयोग में आते हैं। 17 वी 18 वी सदी के दौरान मारवाड़ में काष्ठ कला का महत्वपूर्ण स्थान था। मारवाड़ राज्य में सोजत काष्ठ कला के लिए प्रसिद्ध था। इसके अलावा जोधपुर और नागौर भी काष्ठ कला के लिए प्रसिद्ध थे। काष्ठ कला में खाती जाति के लोग संलग्न थे। ये मारवाड़ के प्रत्येक गाँव और कस्बों में रहते थे। उस समय कारीगरों द्वारा लकड़ी के टुकड़ों को आकार देकर विभिन्न सामान बनाए जाते थे। जिन्हें खाती कहा जाता था। खाती लकड़ी के सामान जैसे खिलौने, दैनिक उपयोग के साजो सामान,खिड़कियाँ, दरवाजे के चौखटे ,गाडी, रथ, नावें, पालकी और कृषि के उपकरण बनाने के कार्य से सम्बंधित थे।

संकेताक्षर:- काष्ठ, मारवाड़, घरेलु, लकड़ी, भारतीय, जाति, संस्कृति, शिल्प, खाती।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT